हृदय ज्ञान
कब स्वर्ग पृथ्वी पर आया
Email : info@wisdomfortheheart.in | Web : www.wisdomfortheheart.in

न्यायाधीशों का न्याय

यूहन्ना - ८:१-११

परिचय

आइए हमारे अध्ययन को यूहन्ना सुसमाचार अध्याय ८ पद १ और २ से शुरु करते है ।

परन्तु यीशु जैतून के पहाड पर गया । भोर को वह फिर मन्दिर में आया, सब लोग उसके पास आए, और वह बैठ कर उन्हें उपदेश देने लगा ।

रब्बी या शिक्षक के लिए प्रथागत स्थिति नीचे बैठने की थी । तब भीड़ उसके चारों ओर इकठ्ठी होती । यह अभ्यास केवल शिष्य या छात्रों किया जाता था, केवल एक मान्यता प्राप्त शिक्षक का शस्त्र व्याख्या करने और कानून के बारे में बात करने का हकदार था ।

आप को शायद पयाद होगा, यूहन्ना अध्याय ७ कि सौनिक यीशु मसीह को गिरफ्तार करने के लिए आए थे । इसके बजाए कि वह पीछे सूचना देते, उन्होंने पहले कभी भी किसी को इस तरह की शिक्षा देते नहीं सुना था

कैसे यह अशिक्षित बढाई, जनता को प्रभावित करता है ? लोगों के नजरिए से, दूसरा संकेत एक और सुसामाचार विषय मरकुस अध्याय १ पद २२ में पाया जाता है, पढ़ते है । और लोग उसके उपदेश से चकित हुए, क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों के सामान नहीं परन्तु अधिकारों के सामान उपदेश देता था ।

अब जब कि रब्बी और शास्त्री सिखाते थे, वे व्यक्तिगत अधिकार के मतलब से नहीं सिखाते थे । वह हमेशा अपनी टिप्पणी को इसके साथ आरम्भ करते थे, वहाँ पर एक शिक्षण है, या यह इस तरह लिखा है, कि .... लेकिन यीशु मसीह किस तरह सिखाता है ? आप ने यह सुना था, कि कहा गया .... लेकिन या ... मैं तुम्हें सच सच कहता हूँ ।

आप देख सकते है, शास्त्री अधिकारियों से सिखाते थे, यीशु मसीह अधिकार के साथ सिखाता था ।

हम यह कल्पना नहीं कर सकते कि वह कितना नाटकीय था । मैं उदाहरण देकर स्पष्ट करने की कोशिश करता हूँ ।

कल्पना करे, कि मैं चर्च में प्रचार करने के लिए पहुँचा, और मैंने कुछ इस तरह कहा, अब सात सालों से हम अध्ययन कर रहे है, बाइबल क्या कहती है, लेकिन अब से, मैं आपकों बताना चाहता हूँ, मैं क्या कहता हूँ ।

फिर मैंने बइबल को दूर रख दिया ।

क्या हुआ होगा ? पहली बात जो हुई होगी, कि हमरी अंतरिम समस्याओं का हल हुआ होगा ।

यीशु मसीह यही कह रहा है, - केवल एक लाख से अधिक नाटकीय रूप से आप के पास कई हजार व र्ा से कानून था, आप ने वह सुना जो मूसा ने लिखा था, लेकिन यह मैं कहता हूँ । अब यहाँ उनके विषय की प्रतिभा है, यूहन्ना अध्याय ८ में । वह सच्चाई को उपयोग करने जा हरे है, वह छल के रूप में अपने स्वंय के अधिकार से सिखाता था ।

आगे पद ५ की ओर देखते है, जहाँ वह यीशु मसीह को चुनौती देते है ।

व्यवस्था में मूसा ने हमे आज्ञा दी है, कि ऐसी स्त्रीयों पर

पथराव करे । अंत में तू इस स्त्री के विषय क्या कहता है ?

अब वापस पद ३ और ४ की ओर मुडे, जहा वह आते है । तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार में पकडो गई थी, और उसको बीच में खड़ा करके यीशु से कहा, हे गुरू यह स्त्री व्यभिचार करते पकडी गई है ।

वहां मेरे मन में कोई शंका नही, कि यह व्यभिचारी दृश्य स्थापित किया गया था, यह अनजाने में, तौभी पापी औरत यीशु मसीह के गले में फन्दा ड़ालने के लिए एक मोहरा था । सवाल यह है, ''वह आदमी कहाँ है, जिसके साथ वह थी ?'' कानून उन दोनों आदमी और औरत से व्यभिचार के भुगतान के लिए उनके जीवन की माँग करता है । क्यों वह आदमी को सामने नहीं लेकर आए ? कुछ सुझाव देते है, कि आदमी भाग गया था । अभी तक पाठ शायद ही भागने के लिए अनुमति देता है । फिर से पद ४ को देखे ।

.... हे गुरू यह स्त्री व्यभिचार करते पकड़ी गई थी .....

शब्द ''पकड़ना'' मतलब जब्त, जीतना, पकड़ लेना । पता चलता है, कि पुरुषों ने सचमुच व्यभिचारी जोड़ो को एक दूसरे से खींच लिया था । और क्रिया काल बताता है, कि वह जिन्होंने उसे खींचा था, वह ही थे, जो उसे पकड़ कर यीशु मसीह के पास लेकर आए थे । कैसे उन्होंने ने उस आदमी को हथियाने का मौका खो दिया ? मैं विश्वास करता हूँ, कि उसे जानबूझ कर जाने की अनुमति दी गई थी । क्यों ? क्योंकि धार्मिक नेता नौतिकता के बारें में चिंतित नहीं थे, वह यीशु मसीह को फँसाने के बारे में चिंतित थे । मैं विश्वास करता हूँ, कि नेताओं ने पहले ही उस व्यभिचारी आदमी से उस औरत पर कब्जा करने की अनुमति की व्यवस्था की थी । शायद नेताओं ने इस अवैध कार्य की खोज की थी, और इस योजना की साजिश, साजिश बताती है, कि यदि आदमी इस चाल में उसके साथ गया होता, वे उसकी पत्नी को प्रकट नहीं करते, कि उसने व्यभिचार किया था । इसलिए आदमी भाग गया, नेताओं ने औरत पर कब्जा कर लिया, और उसे खींच कर यीशु के पास ले गए ।

अब इसे पाने के लिए शुरु ''कठिन'' पद ५ और ६ में ।

व्यवस्था में मूसा ने हमे आज्ञा दी है, कि ऐसी स्त्रियों पर पथराव करे । अंत तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है ? उन्होंने उसकों परखने के लिये यह बात कही ताकि उस पर दो लगाने के लिए कोई बात पाए । परन्तु यीशु झुककर उँगली से भूमि पर लिखने लगा ।

यह दुविधा है ? यूहदी महासभा सुप्रीम कोर्ट मे मौत के लिए लोगो की दण्ड देने का नियमित अभ्यास नहीं था - वास्तव में ..... रिकॉर्ड का एक पैरा (माग) यदि महासभा किसी व्यक्ति को मौत को सजा का दण्ड देती थी, अक्सर हर साँत साल में एक बार होता था । वह एक कसाईखाने के विषय में विचार कर रहे थे ।'' एक कारण था, कि मौत की सजा बहुत बार सख्त जरुरतो पर निर्भर नही करता था । यह रब्बी द्वारा व्यभिचार में पकड़े किसी के लिए निर्धारित था । वहाँ कई गवाहों के साथ एक बख्तरबंद मामला होता था । वास्तव में वे सचमुस अधिनियम में पकड़े जा सकते थे ।

और यहा मामला बस उसी तरह का था, यह खुला था, और बन्द था ।

क्या आप स्त्री की कल्पना कर सकते है ? वह वहाँ खड़ी सार्वज निक रूप से अवगत कराई जा रही थी । शायद उसने वस्त्र भी पूरे नहीं पहने थे, दुश्मन धार्मिक नेताओं के सामने परिहासशील खड़ी थी । लोगों की भीड़ उस कानाफूसी, चकित और हैरान हो रही थी जैसे वह नासरत के पवित्र गुरु के सामने खड़ी होती है, जिस किस ने माना मसीहा था । क्या आने वाले महान सफेद सिहांसन का एक उद्धाहरण है ।

वह सब जिन्होंने उद्धारकर्ता को अस्वीकृत किया था, वह सब उसके सामने खड़े होगें । वह अपने पाप बख्तबंद होने के कारण दोषी उजागर होगे । फर्क यह है, कि वहाँ पर कोई माफी नही दी जाएगी, लेकिन आज यहा है ।

देखे पद ७

जब वे उससे पूछते ही रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहा, ... तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे ।

हम यीशु मसीह के शब्द की उलझन को उजागर करने से पहले, मैं विश्वास करता हूँ, कि हमें एक महत्वपूर्ण वि य को संबोधित करने की जरुरत है । मैं नहीं जानता कि मैंने कितनी बार किसी को यीशु मसीह के शब्दों का उतलेख देते सुना है, विश्वास के जीवन में अनुशासनहीन जाने के लिए पाप को अनुमति के लिए एक औचित्य के रूप में और चर्च के जीवन में ।

आप ने कितनी बार किसी को यह कहते सुना था, ''आपको कोई अधिकार नहीं उस आदमी का न्याय करने का । पाप रखे ।

''दो ''मत लगाओं कि तुम पर भी दो ना लगाया जाए ।''

का न्याय करना सही होगा ?

आओं सवाल का उत्तर दे, कब न्याय करना सही होगा ?

जब कोई खुले तौर पर वचन का विरोध - करता है ।

१. पहला, न्याय करना सही है, जब कोई खुले तौर पर वचन का विरोध - करता है । १ कुरिन्थियों अध्याय ५ पद १ से ३ में पौलुस लिखता है ।

यहाँ तक सुनने में आता है, कि तुम में व्यभिचार होता है, वरन ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता, कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है । और तुम शोक तो नहीं करते, जिससे ऐसा काम करने वाला तुम्हारे बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड़ करते हो । मैं तो शरीर के भाव से दूर था, परन्तु के आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर मानों उपस्थिति की दशा में ऐसे काम करने वाले के विषय में यह आज्ञा दे चुक हूँ ।

लेखक लिखता है, कि सबसे अच्छा विक्रेता (सबसे बढ़िया) या नबंर एक के लिए देखता है । क्या सही है, के बारे में दूसरे व्यक्ति को परिषद द्वारा धमकाया नही जाता है । विशेष रूप से नैतिकता के विषय में, नैतिक स्तरों को भूल जाते है, और दूसरों ने आप के ऊपर ठूसने की कोशिश की है ।

हमारी उम्र नैतिक जवाबदेही को रोकती है । और चर्च का विश्वासी जो खड़ा होता और पाप का न्याय करता है, जैसे पाप इसके लिए पूछ रहा है । मेंने चर्च के अनुशासन को पढ़ा, इसकी सदस्यता के लिए बाहर जो स्त्री अनैतिकता में जीती है । वह चर्च पर मुकदमा दायर करती है । वह कहती है, उन्हें उसका न्याय करने का कोई अधिकार नहीं । वह मुकदमा जीत गई ।

और हमारी संस्कृति के बीच असमानता काफी चौड़ी है, और उत्पीडन के लिए अवसर काफी नजदीक है जन कोई खुले तौर पर वचन का इन्कार करता है ।

२. दूसरा - न्याय करना सही है, जब कोई खुले तौर पर वचन का इन्कार करता है ।

हमारी संस्कृति और तेजी बड़े पैमाने पर सैद्धान्तिका या धार्मिक निरपेक्षता के विचार का अधिक से अधिक विरोध करती है । वे काले और सफेद भी होते है, विभाजनकारी भी, हमने शब्द को प्रतिस्थापित किया था ''पाप'' के साथ ''समस्या'' आज का लोकप्रिय संदेश है - हमें हमारे सिद्धात को एक तरफ रख कर एक जुट होना है

पौलुस की सुने रोमियों अध्याय १६ पद १७ सतरह

''अब हे भाइयों, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट ड़ालने और ठोकर खिलाने का कारण होते है, उन्हें ताड लिया करों और उनसे दूर रहो ।''

..... जो आपने सिखा, और उस से मुड जाओं .....

यूहन्ना को सुनो २ यूहन्ना पद १० से ,

''यदि कोई तुम्हारे पास आए और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो । क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उसके बुरे कामों में साझी होता है ।''

कि यह आवाज नहीं करता, यह बहुत प्यार से करता है । मैं हैरान हूँ, कि जान आज भी किता लोकप्रिय होगा । उनके लिए जो कहते है । ऐकता और कल्याण के लिए सिद्धातों को एक तरफ रखों ।

पौलुस गलतियों अध्याय १ पद ८ में कहता है ।

''परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो शापित हो ।''

इसलिए

- जो पादरी यह उपदेश देता है, कि यीशु मसीह सचमुच क्रब से जिन्दा नहीं हुआ, शापित है,
- जो धार्मिक नेता यीशु मसीह को प्रभावकारिता प्रायश्चित का इन्कार करते है, शापित है ,
- जो कोई वचन की दिव्य प्रेरणा का इन्कार करते है, वे शांति है, और

- चर्च के जो नेता यह प्रचार करते है, कि उद्धार, दया के द्वारा - साथ में कार्य - बपतिस्मा, और, और, और ..... शापित है ।

यह इस तरह आवाज नहीं करता कि, पौलुस खुला और प्रिय संभाषण से बुला रहा है । यह इस तरह नहीं लगता कि पौलुस दुनियामें है । नहीं वह सिद्धातों के मैदान में विभाजन के लिए बुला रहा है । सो जबकि चर्च बड़े पैमाने पर बाइबल के एक तरफ परम सत्य पर बैठी है, चाहे कोई भी कारणों को वह चुने, हमारी दुनिया पहले कभी इस तरह को सच्चाई को तलाश में नहीं थी ।

जब हम हमारा स्वंय परमेश्वर के साथ चलने का मूलयांकन करते है ।

३. तीसरा, न्याय करना सही है, जब हम हमारा परमेश्वर के साथ चलने का मुल्यांकन करते है ।

१ कुरिन्थियों अध्याय ११ में फैसले की जानकारी पाँच बार ३ पदों में पाते है, जैसे एक विश्वासी का प्रभु भोज के लिए दृष्टिकोण फिर से हमारी मसीही संस्कृति मिटा देने वाला पछतावा और स्वंय मुल्याकंन एक विश्वासी के जीवन में होना चाहिए, ''यह बहुत निराशाजनक है । हमे जरूरत है, कि अपना ध्यान सकांरात्मक सोच के ऊपर केंद्रित करे । हाँ, पवित्रता का पीछा दृढ़ विश्वास पैदा करेगा, और अंगीकार के लिए जरुरत ।

जब हम वचन के प्रकाश में हमारी अपनी दुनिया का मुल्यांकन करते है ।

४. अतिम - न्याय करना सही है, जब हम वचन के प्रकाश में हमारी अपनी दुनिया का मुत्याकंन करते है

सुने, १ फुरिन्यियों अध्याय २ पद १५

आत्मिक जब सब कुछ

(या न्यायकर्ता सब चीजें

पौलुस किस के बारे में बात कर रहा है ? प्रवर्धित बाइबल इसका अनुवाद करती है, ''परन्तु आत्मिक आदमी सारी चीजों की कोशिश करता है - वह है, वह परीक्षण, जाँच, पूछताप, सवाल और सारी चीजों को जानता है ।''

वह आलोचनात्मक नहीं, लेकिन वह नाजुक रूप से सोच रहा है ।

मैं जनरल स्टोर पर लाईन में खड़ा था - यह उन में से कुछ असाधारण पल थे, जब मेरी पत्नी ने मुझे जरनल स्टोर पर भेजा था । इस बात का विश्वास करते, कि जिस चीज के लिए भेजा है, उस चीज के साथ घर आऊगा । मैं हमेशा चाँकलेट कवर डोनटस् लेकर एक अलग प्रकार के साथ घर आता हूँ । यदि आप मुझे जरनल स्टोर पर भेजे, मैं हमेशा घर इस चीजें के साथ कुछ संबधित मैं खरीदना चाहता था, और चाँकलेट कवर डोनटस्

मैं पत्रिकाओं से चारों ओर घिरा लाईन में खड़ा था, जो पूरी तरह जंगली सुर्खियों से भरा था, जैसे, कि गोरिला ने जिराफ को जन्म दिया था, एतिवस सीन बेचा गया । टेनेसी में एमवे (or) या बाहय अंतरिक्ष एलियस व्हाइट हाउस के साथ संवाद - मुझे लगता है । कि मैं विश्वास कर सकता हूँ । इस ने लाईन में इन्तजार को काफी मनोरंजक बना दिया । हालाकि एक शीर्षक ने मेरा ध्यान पकड़ा । इसे पढ़े ।

क्या आप चमत्कारों पर विश्वास करते है ? यदि आप करते है, आप अकेले नहीं है । जॉर्जिया में एक बोर्ड पर मसीह के चेहरे को यूगोस्लाविया में एक पहाड़ पर कुंवारी की दुष्टि ने देखा । जो चिन्ह है, कि परमेश्वर की उपस्थिति लाखों लोगों को छू रही है । मैं इस जीवन पत्रिका के मुझे को लाया, और मैं विश्वास नहीं कर सकता, क्यों लोग इसको खरीद रहे थे ।

क्यों ? क्योंकि वह चीजों को वचन की रोशनी में नहीं जांचते मैंने इसके बारे में पढ़ा

- मुस्लिम गुरूओं, जो रहस्यमय चिकित्सा प्रदर्शन करने में सक्षम होने लिए कहते है ।

- बेसाईड़ कवीस में लोगों का बढ़ता समूह, जो विश्वास करते है, कि वह हवा में तुरन्त फोटों खिचने वाले कमरे से पवित्र कुंवारी (Holy Virgine) की फिल्म को बना सकते है । और,

- न्यूयॉर्क में हसीदक यहूदी, जो विश्वास करते है, कि उनके रब्बी तलिका बीमारी का इलाज कर सकते है । और खुश विवाहत जीवन की गांरटी देते है, ताकि वह अपने बचे हुए भोजन को होड़ में धकेल दे ।

स्त्रीयों और सज्जनों, हम ऐसे दिन में रह रहे है, जब आत्मिक प्रभेद बड़ा महत्वपूर्ण है । चर्च को न्याय करने योग्य तजुर्बा होना चाहिए । और वचन की रोशनी के उपर विश्वास होना चाहिए ।

इब्रानियों का लेखक अध्याय ५ पद १४ में कहता है,

''पर अन्न सयानों के लिए है, जिनको ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते भले - बुरे में भेद करने में निपुण हो गई है'' मैं विलियम टिंडेल, जिसने १५२६ में न्याय किया, वर्तमान धार्मिक विचार गलत है, जो घोषणा करता है, कि बाइबल केवल पुरोहितों द्वारा स्वीकार और पढ़ी जाती थी। वह अपने देशवासियों को एक अंग्रेजी अनुवाद देने के लिए चला गया, और उसका भुगतान उसने अपने जीवन के साथ किया।

एक सेमनेरी प्रोफेसर था, जो अकसर कहा करता था, हर पीढ़ों में ईसाई समुदाय कही गलत था। क्या आप जानते है, यह आज कहाँ पर गलत है ? अब मैं इस बात का प्रस्ताव नहीं कर रहा हूँ, कि हम हर चीज में छिद्रान्वेषी ढ़ंग के बन गए है। सच्चाई यह है, कि एक छिद्रान्वेषी मनुष्य छिद्रान्वेषी मनुष्य ही होता है।

मैं आलोचनात्मक बनने के लिए नहीं कहता, मैं गंभीर सत्व होनें के लिए कह रहा हूँ।

यहाँ समय और कारण होते है, जब न्याय करना सही होता है। अब सवाल यह है, आप आज क्या न्याय कर रहे है ? क्या आप विचारशील है, या भोलेपन से कुछ भी और सब कुछ खोल रहे है ? आपके सभी तथ्यों को जानने से पहले जब न्याय होता है।

१. पहला न्याय करना गलत है, जब न्याय अपके सभी तथ्यों को जानने से पहले किया जाता है।

यूहन्ना अध्याय ७ पद ५१ कहता है,

क्या हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को जब तक पहले उसकी

सुनकर जान न ले, कि वह क्या करता है, दोषी ठहराती है ?

जब न्याय किसी अन्य व्यक्ति के व्यक्तिगत विश्वास की निंदा करता है।

२. दूसरा - यह भी न्याय करना गलत है, जब न्याय किसी अन्य व्यक्ति के व्यक्तिगत विश्वास की निंदा करता है।

यह दो दिशाओं में जाता है - वह जो लोग विधि सम्मत दूसरों की निदां करते है, जो कुछ बातों की अनुमति देते है, और वह जो एक सख्त जीवन जीने वालों के ऊपर दंमपूर्ण उपहास करते है।

क्या ही मुशिकल है, यह अध्याय, कि परमेश्वर लोगों को आशी देता है, मैं उसके साथ सहमत नहीं।

जब न्याय किसी अन्य व्यक्ति के इरादों पर हमला करता है।

३. तीसरा - तब न्याय करना गलत है, जब न्याय किसी अन्य व्यक्ति के इरादों पर हमला करता है।

१ कुरिन्थियों अध्याय ४ पद ५ कहता है।

''इसलिये जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करों वही अन्धकार की छिपी बाते ज्योति में दिखाएगा, और मनों के अभिप्रायों को प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशांसा होगी।''

हमे लोगों को सन्देह का लाभ देने के लिए सावधान रहना होगा। रब्बी ने सिखाया, वे क्या मानते है, कि एक आदमी छः (६) महान कार्य को कर सकता था।

- वचन का अध्ययन।

- बीमारों के पास जाना।

- अजनबीयों के प्रति दया दिखाना।

- प्रार्थना करना।

- बच्चों को वचन के बारे सिखाना और

- लोगों के लिए अच्छा सोचना।

जब न्याय आत्म धार्मिकता का प्रदर्शन बन जाता है।

अंत में यह भी न्याय के लिए गलत है, जब न्याय आत्म धार्मिकता का प्रदर्शन बन जाता है।

यीशु ने मत्ती अध्याय ७ पद मं कहा

दोष मत लगाओं कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।

अब, वह विवेक की बात नहीं कर सकता, और न हो दूसरे किस्म के न्याय, जो हमने देखा हो, जिसे वचन में मान्यता प्राप्त

हो । वह न्याय के लिए बात कर रहा है, जो कि धार्मिक नेताओं के लिए विशिष्ट थी । यह न्याय का एक, कठोर, दिखावटी, अलोचनात्मक रूप था । जो बिना समाधान के प्रस्ताव के पाप को उजागर करता था ।

मत्ती अध्याय ७ पद २ का पहला भाग पढ़े ।

क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो,

आत्म धार्मिकता दोष न्याय, अपनी ही फासी बनाता है ।

प्राचीन फारस में एक निश्चित भ्रष्ट जज अक्सर एक झुठे फैसले रेंड़र करने लिए रिश्वत स्वीकार किया करता था ।

अंत में फारसी राजा Combyses ने इस भ्रष्ट जज की खोज की और उसे मार डाला । तब उसने आदेश दिया कि उस जज की चमड़ी निकाल दी जाए और उस त्वचा को एक गाय छुपाने के रूप मे उपयोग किया जाए, और चमड़े में तबदील कर दिया जाए । हाई कोर्ट जज की कुर्सी को उस चमड़े से ढका जाए, जो बाद के न्यायाधीशों, जो उस कुसरी पर बैठ कर फैसलों का न्याय करते है , वह न्याय बिगाड़ने के परिणामों को हर दिन याद रखें

यह खतरनाक है, जैसे कि एक पापी मनुष्य का कुर्सी पर बैठना केवल परमेश्वर पाप के बिना जगह ले सकता है । यह आदमी परमेश्वर के साथ खेल रहे थे ।

और अब यूहन्ना अध्याय ८ का पहला भाग, यीशु उनकी छुपी चमड़ी के बारे में ।

देखे पद ८

और फिर झुककर भूमि पर उँगली से लिखने लगा ।

अब उसने दो बार लिखा था । वारेन Wirsbe ने सुझाव दिया, कि यह पत्यर की दो पटियों में एक सुक्ष्म अनुस्मारक था, जो कि परमेश्वर ने अपनी ऊगँली से लिखा था । वहाँ पर कुछ है, जो यह विश्वास करते है, कि यीशु मसीह रेत पर लिख रहा है, क्योंकि वह शर्मिदा है ? वहाँ पर कुछ ने अयोजित किया, कि यीशु मसीह नीचे गिर गया, क्योंकि वह नहीं जानता था, कि क्या कहे । हांलकि यह दिलचस्प है, कि नये नियम में यही समय है, कि यीशु मसीह कुछ लिख रहा है । के लिए सामान्य शब्द ''लिखना'' .. (है) ... (ग्रैफों) इस वाक्य में अभी तक दो बार शब्द उपयोग हुआ है Katagrapko (काटाग्रैफों) जिसका अर्थ है, लिखने के खिलाफ एक रिकार्ड ।

वही शब्द अय्यूब अध्याय १३ पद २६ में प्रकट होता है ।

तू मेरे लिए कठिन दुखों .....

Katagrapko काटाग्रैफों

..... कड़वी बातों मेरे विरोध में .....

क्या मुझे विश्वास है, अदालत के सन्नाटे में बात करने की जगह, क्या, इस लोगों ने यीशु मसीह की मिही के ऊपर लिखने की खरोच को सुना था ? मैं विश्वास करता हूँ, वह उन्ह मुनाष यों के पापों की सुची लिख रहा हूँ, जो उन्होंने अपने निजी जीवन की परछाई मैं किए थे । यीशु न्यायधीश न्याय करने के बारे में । उसने उनकों अन्धेरे में देखा था, उसने उनके पापों को देखा था, वह उन्हें अच्छी तरह जानता था ।

पीटर मार्शल ने लिखा

यीशु मसीह उन बहुत दिलों को देखता है, और जैसे उसकी ऊगँली लिखती है, मूर्ति पूजक, झुठा, शराब पीने वाले, खुनी व्यभिचारी, वहाँ फुटपाथ पर पत्थर के बाद पत्थर गिरने का धमाका हुआ । एक, एक वह निकल गए । छाया, में से चुपके से निकल गए, पैर घसीट कर, गली की भीड़ में से खुद को बचने के लिए निकल गए

क्या इन लोगों ने सोचा था, कि वह परमेश्वर को मुर्ख बना सकते है ? परेशानी यह है, कि वह नहीं जानते थे, कि वह उसके सामने खड़े थे । भले ही उसने पहले ही उन्हें बता दिया था, कि वह कौन था ।

मैं याद कर सकता हूँ, कि प्राथमिक स्कूल पाँचवी कक्षा में मेरी एक ..... नामक अध्यापिका थी । मैं याद करता हूँ मैं उसकी कक्षा में मुसीबत में था, जब मैं एक माँडल छात्र था, और इस बार मैं कुछ दुर्व्यव्यहार को याद करता हूँ, जैसे कि .... का अभ्यास था, उसने मेरे घर मेरी गलती के वर्णन का नोट भेजा, और फिर माँग की, कि मेरे माता, पिता में से कोई एक उस पर साइन करे । यह अत्यत क्रूर योजना थी । मुझे लगा, कि मेरे पास दो विकल्प थे ।

सोवियत संघ के लिए दोष या कबूल । मैं गहरे पानी में था । तब मैंने एक दूसरे विकल्प के बारे में सोचा । मैंने अपने पिता के

साइन करने का निर्णय किया । किसी कोई कभी पता नहीं चलेगा । मैंने लिखने की कोशिश की "Scribbly" (लिखना) मेरे पिता के सामान एक सीधी लाईन के साथ "K" और गोल झटके से "H" के ऊपर और "D" मैंने कर्सिन लिखने के लिए हर कौशल लागू किया, ''कीथ ड़ेवी'' जब मैंने इसे खत्म किया यह मेरे पिता के साइन की तरह नहीं लगा रहा था, इसलिए मैंने गीला पेपर, तोलिया लिया और स्याही को रगड़ने लगा, ताकि यह मुश्किल से पढ़ा जा सके । मुझे Miss Longneker को बताना होगा, कि यह सिंक में गिर गया था । मैंने नहीं कहा कि मैं एक होशियार पापी था । अवश्य ही मैं पकड़ा गया था । और सारी यातना और सजा मेरे गरीब आत्मा पर पहाड की तरह टूट पड़ी थी ।

वह मुझे मिड़ल स्कूल के एक छात्र टॉमी की याद दिलाती है, कि मैंने उसके बारे में पढ़ा । वह हॉकी खेलता था । उस सुबह उसने स्कूल को बुलाया, और प्रिंसिपल को जवाब देना था । टॉमी ने अपनी धीमी आवाज में कहा, थामॅस बारडली आज स्कूल में हो । प्रिंसिपल इस आवाज के प्रति संदेहजनक था, और कहा, क्या मैं जान सकता हूँ, कि कौन बोल रहा है ?

एक लम्बे ठहराव के बाद, आवाज ने उतर दिया, यह मेरा पिता बोल रहा है, टॉमी और मैं एक ही थे । क्या आप इससे अधिक बेतुका भी जानते है ? सदूकी और फरीसी सर्वज्ञ परमेश्वर के सामने खड़े वह अपने आप में सोचते है, कि वह पापों से मुक्त है ? सोचते है, कि वह पवित्रता के हस्ताक्षर कर सकते है, सोचते है, वह न्याय पंचायत और जतलाद से खेल सकते है ।

अध्याय ८ पद ९ की ओर ध्यान दे ।

'' परन्तु वे यह सुनकर बड़ो से लेकर छोटों तक, एक एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वही बीच में खड़ी रह गई ।''

ध्यान दे कि यीशु मसीह पद १० से ११ में क्या करता है ।

यीशु ने सीधे होकर उससे कहा, ''हे नारी, वे कहाँ गए, क्या किसी न तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी ? उसने कहा हे प्रभु किसी ने नहीं ।''

इस दृश्य की कल्पना कीजिए । उस पर दोष लगाने वालो के गायब होने से मंदिर शान्त था । केवल यीशु मसीह को अधिकार था, पहला पत्थर मारने का । इसलिए इस पल प्रश्न यह है, क्या एक गंदी औरत कन्धों पर गिर जाती है, और उसकी आखें अभी तक ड़र से भरी हुई थी । उसने उसकी ओर देखा, और औरत ने उसकी (यीशु) की ओर देखा, और चारों ओर विरान मन्दिर में चुपी थी । पद ११

''यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दण्ड़ की आज्ञा नहीं देता जा और फिर पाप न करना ।''

विचार करने के लिए अंक

यहाँ विचार करने के लिए दो बहुत महत्वपूर्ण अंक है ।

यीशु मसीह ने उसको पापों को खारिज नहीं किया ।

१. पहला यीशु मसीह ने उसके पापों को खारिज नहीं किया वह उसके पापों के लिए मरेगा ।

मानव न्यायाधीश एक बात करना चाहते थे - पंसद के साथ वह दोष लगाना चाहते थे । यह उनकी समारोह के साथ असंगत है । वे पापी को बहाल करने वाले थे । जेम्स डोबसन ने एक बार दक्षिणी कैलिफोर्निया में एक कोवेंट पर हस्ताक्षर देखकर सूचना दी । ''इसे पढ़े'' बिलकुल कोई अतिक्रमण नहीं । उल्लंधन करने वालों पर कानून की पूर्ण सीमा तक मुकदमा चलाया जाएगा ।

इस पर हस्ताक्षर किये गए थे । ''दया की बहन ''

यीशु धार्मिक न्यायधीश है, वह माफ करना चाहता था, और इसलिए उसने किया । यह सब करते हुए वह जानता था, कि कई पापों में से एक था, वह क्रूस के ऊपर मरा, ताकि पापों का जुरमाना भर सके । वह वहाँ पर योग्य था, कि उस और को दूसरा मौका दे सके ।

यीशु मसीह केवल उसके भूतकाल के पापों को क्षमा नहीं करेगा - - -

२. दूसरी बात यह है, कि यीशु मसीह केवल उसके अतीत के पापों को क्षमा नहीं करेगा, वह उसके भविष्य को चुनौती देगा ।

यीशु मसीह ने इस औरत के जीवन का सामना किया । उसने यह नही कहा ''सब ठीक है'' चिन्ता मत करो । जैसे आप करते है, करते रहे ।

नहीं, उसने कहा, यह सब गलत है । यहाँ से चलो जाओ और, अगर मैं वास्तव में प्रभु एक व्यभिचारी का जीवन जीना छोड़ दो । यह एक आसान माफी नही है । यीशु मसीह ने उस दिन एक विकल्प के साथ महिला का सामना किया । या तो वह अपने पुराने रास्ते पर चली जाए, या फिर एक माँफ की हुई महिला का साफ जीवन व्यतीत करे (Rey stedman) बस में अपनी बगत में बैठे एक युवक जिसके हालही में यीशु मसीह को ग्राहण किया था, कहानी सुना रहे थे । पास्टर stedman ने उस को बताया कि उसका नया जीवन क्या है, अर्थ है, और उसने बताया कि अब वह पूरी तरह सारे डर और मृत्यु से आजाद है । उस पुवक ने मुड कर पास्टर stedman की आखों में देखा और कहा, मैं वास्तव में मौत से नहीं ड़रता हूँ । लेकिन मैं आप को बताऊँगा कि अब मुझे किस बात से ड़र लगता है । मुझे डर लगता है, कि मैं अपने जीवन को बर्बाद न कर दूं ।

यीशु मसीह ने इस औरत से कहाँ जा और अपना जीवन बर्बाद करना बन्द कर । यीशु मसीह की हमेशा तीव्र रूचि रही थी, केवल यह ही नहीं कि वह आदमी क्या था, लेकिन एक आदमी क्या बन सकता है । इस पल में आप एक अतीत है, लेकिन यीशु के साथ, आपके पास भविष्य है ।

एक पुरानी कविता पढ़ते है ।

मैं कैसे इच्छ करू, कि वहाँ पर एक अद्‌भुत जगह थी, जि से शुरुआत की भूमि कहा जाता था । यहाँ हमारे सारे पाप और सारे दिल के दर्द एक पुराने जर्जर की तरह दरवाजे पर गिरा दिये जा सकते है ।

और फिर कभी नही आते ।

वहाँ पर एक इस तरह का देश है – यह कलवरी कहलाता है - जहाँ आपके पापों का वजन एक पुराने भारी कोट की तरह गिर सकता है । यह वह जगह है, जहा पर यीशु मसीह आपके अंतीत को क्षमा करेगा - और अपके भविष्य को चुनौती देता है ।

बाइबल हमें यह नहीं बताती कि इस औरत को क्या हुआ । उसकी कहानी अधूरी कहानी थी । और इसलिए आपकी भी । क्या आप उसे अपने अतीत के साथ करने को अनुमति देगे ? आप उसे अपने भविष्य के साथ क्या करने की अनुमति देगे ?